ISBN: 978-93-24457-18-7

पुणे जिल्हा शिक्षण मंडळ, पुणे संचलित

अण्णासाहेब वाघिरे महाविद्यालय, ओतूर

तहसिल–जुन्नर, जिला–पुणे, दूरभाष : ०२१३२–२६४१३८

नॅक नामांकन

(Cycle - IInd Grade-B)

बी. सी. यु. डी.

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

के सहयोग से एवं

मराठी, हिंदी, इंग्रजी विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

द्वि–दिवसीय राज्यस्तरीय संगोष्ठी

दि. २०–२१ जनवरी, २०१७

–: विषय :–

"भारतीय भाषा साहित्य में व्यक्त दलित एवं आदिवासी विमर्श"

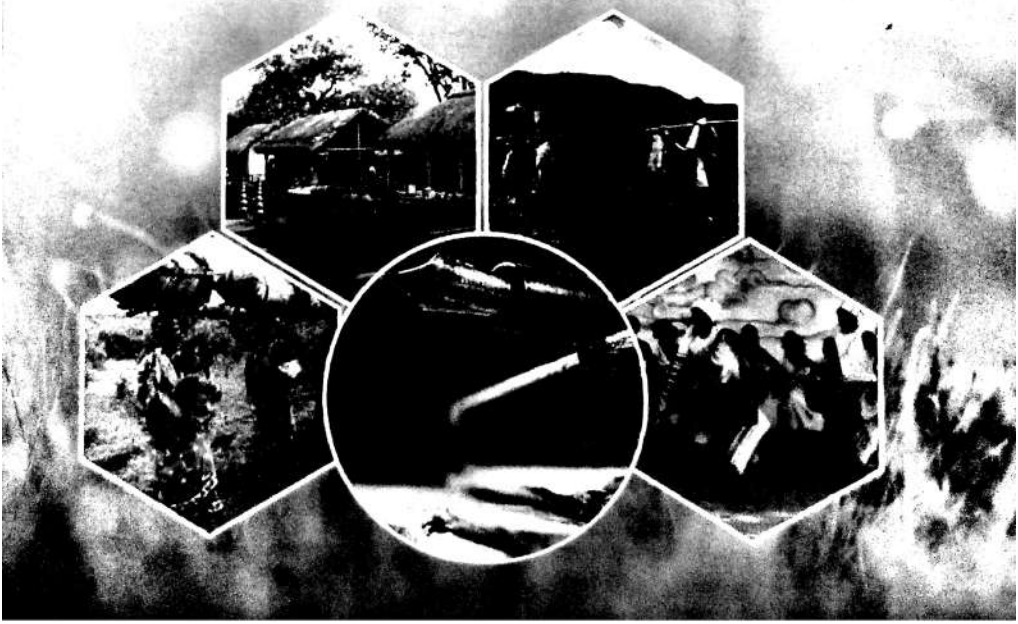

Scanned by CamScanner

अण्णासाहेब वाघिरे विज्ञान, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, ओतूर
राज्यस्तरीय संगोष्ठी की

उपलब्धि

''भारतीय भाषा साहित्य में व्यक्त दलित एवं आदिवासी विमर्श''

20 एवं 21जनवरी 2017
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (बी.सी.यु.डी.) के
सहयोग से

संपादक मंडल

प्राचार्य, डॉ. पंडित शेळके	डॉ. डुंबरे जी.एम., उपप्राचार्य
(प्रधान संपादक)	(सदस्य)
डॉ. डी.एम. टिळेकर	डॉ. ढाकणे एस.एफ. उपप्राचार्य
(संपादक)	(सदस्य)
प्रा.सोनावणे के.डी.	डॉ. बागुल एम.एम.
(सह संपादक)	(सदस्य)

संयोजक
पुणे जिल्हा शिक्षण मंडळ का
अण्णासाहेब वाघिरे विज्ञान, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
ओतूर तह.जुन्नर जिला पुणे,
महाराष्ट्र 412409

Scanned by CamScanner

State Seminar : 20 & 21 January 2017

Editorial:

The editors and editorial board with great pleasure to place before the readers of the State Seminar on **"भारतीय भाषा साहित्य में व्यक्त दलित एवं आदिवासी विमर्श"**

The research contributions by the participants have made the proceeding of the seminar book enrich with the knowledge resources. The timely publication of seminar book was the collective efforts of our editors, editorial board and the technical staff. The seminar has diversified areas covered under its ambit giving maximum option for the research scholars. We thank all the authors for their contribution expect contribution in the future from everyone.

Disclaimer

The views expressed in the seminar book are those of author (S) and not the publishers or the Editorial Board. The readers are informed; editors or the publishers do not owe any responsibility for any damage or loss to any person for the result of any action taken on the basis of the work. The articles/papers published in the seminar book are subject to copyright of the publisher. No part of the publication can be copied or reproduced without the permission of the publishers.

Printed By –

Success Publications
Radha Krisna Apartment, 535, Shaniwar Peth,
Opp.Prabhat Theatre, Pune - 411030.
Contact - 8390848833, 020-24433374, 24434662
Website- www.sharpmultinational.com
ISBN : 978-93-24457-18-7

For
The Principal,
Dr. Pandit Shelke
Annasaheb Waghire College of
Science, Arts & Commerce College, Otur, Tal. Junar, Dist Pune – 412 202.

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

अ.न.	शोधालेख का नाम	शोधकर्ता का नाम	पृ.क्र.
1.	महाश्वेता देवी की कहानियों में निहित आदिवासी विमर्श	डॉ. कॅप्टन बाबासाहेब माने	1
2.	डॉ. काशीनाथ सिंह की कहानियों में अभिव्यक्त द्लित चेतना	डॉ. सुनील द. चव्हाण.	5
3.	सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित विमर्श	डॉ.मंगल ससाणे	7
4.	शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. अशोक द्रोपद गायकवाड	10
5	भारतीय कथा साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. साहेबराव गायकवाड	14
6	ओमप्रकाश वाल्मिकी का 'जूठन'	शिला महादू घुले	16
7	ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'घुसपैठिये' कहानी संग्रह में दलित विमर्श	प्रा. मनोहर जमदाडे	19
8	दलित चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति : मुंबई कांड	डॉ. सचिन कदम	22
9	भारतीय आदिवासी जनजातियाँ : एक परिचय	डॉ. अनिल काळे	24
10.	हिंदी कहानी साहित्य में दलित विमर्श	डॉ. शरद भा. कोलते	28
11.	'रामदरश मिश्र के उपन्यासों में दलित संवेदना'	डॉ. बेबी कोलते	31
12	हिंदी कहानियों में दलित – विमर्श	डॉ. संजय म.महेर	34
13	हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श (महाशुद्र कहानी के विषेष संदर्भ में)	डॉ. दत्तात्रय मोहिते	37
14	'व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश : पच्चीस चौका डेढ़ सौ'	डॉ. जितेंद्र पाटील	40
15	संत रविदास के काव्य में दलित विमर्ष	प्रा. सीताबाई नामदेव पवार	43
16	दलित साहित्य की वैचारीक पृष्ठभूमी	प्रा. भास्कर शिवलाल राठोड	45
17	'सिलिया' कहानी में व्यक्त दलित चेतना	डॉ.मधुकर बी. राठौड	48
18	जगदीशचंद्र के 'धरती धन न अपना' उपन्यास में दलित चेतना	श्री. शरद कचेश्वर शिरोळे	50

Scanned by CamScanner

महाश्वेता देवी की कहानियों में निहित आदिवासी विमर्श

डॉ. कॅप्टन बाबासाहेब माने
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय,
जुन्नर, पुणे।
भ्रमणध्वनि – 09890730583

आदिवासी जन–जीवन में भारतीय समाज एवं संस्कृति के प्रारंभिक बीज दिखाई पडते हैं । आजकल आदिवासी जीवन में समय के अनुसार जरुर परिवर्तन नजर आ रहा है । परंतु आज भी इनके जीवन में भारतीय समाज की वे परंपराएँ एवं पद्धतियां दिखाई पडती हैं । जों सदियों से चली आ रही हैं।भारत के अनेक राज्यों में आदिवासी जनजातियां पाई जाती हैं । इन जातियों का जीवन आज भी उतना विकसित नहीं हो पाया है, जितना कि हो जाना चाहिए था। वनों, पहाडों, जंगलों, गिरिकंदराओं, बियाबानों में रहने वाला यह आदिवासी समाज सदियों से सताया जा रहा है। सदियों से वंचित एवं पीड़ित इस समाज की समस्याओं, उनके हर्ष–विशाद, रुढ़ि–परंपराओं, जीवन–पद्धियों तथा उन पर होनेवाले अत्याचारों को कई साहित्यकारों में अपने साहित्य में वाणी देने का प्रयास किया है। अतः महाश्वेता देवी भी एक ऐसी साहित्यकार हैं कि जिन्होंने अपनी अनेक कहानियों में आदिवासी जीवन की वास्तविकताओं को वाणी देकर इस समाज पर हो रहे अन्यायों एवं अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने का सफल प्रयास किया है । उनके द्वारा रचित अनेक कहानियों का कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है ।डॉ. माहेश्वर द्वारा हिंदी में अनूदित उनकी **'बाढ़', 'बीज','द्रोपदी', 'रांग नंबर', 'शिकार', 'शाम सवेरे की मां', 'बांयेन', 'बेहुला'** आदि कहानियां आदिवासी समाज की विभिन्न वास्तविकताओं को समाज के सम्मुख लाती हैं। इस आलेख में महाश्वेता देवी की डॉ. माहेश्वर द्वारा अनूदित 'बाढ़', एवं **'बीज'**, नामककहानियों में निहित आदिवासी विमर्श पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है ।

'आदिवासी' शब्द से ही उसके अर्थ की प्रतीति होती है । 'आदिवासी' शब्द **'आदि'** और **'वासी'** इन दो शब्दों के योग से बना है । जिसका अर्थ होता है –पहले से निवास करने वाला या प्रारंभिक काल से वास करने वाला समुदाय आदिवासी कहलाता है । यह समाज आदिम काल से जंगलों, वनों में समूह बनाकर रह रहा है। यह अपने समुदाय के अनुसार एक ही भाषा बोलता है, समान व्यवसाय करता है और एक समान नियमों के अधीन जीवन यापन करता है। आदिवासी की परिभाषा करते हुए डी. एन. मजूमदार लिखते हैं कि "एक नाम होने वाला, एक ही भू–प्रदेश पर रहने वाला, एक ही भाषा बोलनेवाला, समान व्यवसाय, नियमों को माननेवाला, आदिवासी है ।"[1]रमणिका गुप्ता के शब्दों में "आदिवासी यानी मूल निवासी यानी भारत का मूल बाशिंदा, इस धरती का पुत्र, धरती और प्रकृति के साथ पैदा हुआ, पनपा, बढ़ा और सहजीवी बना ।"[2]अतः कहा जा सकता है कि भारत का मूल निवासी, प्राकृतिक जीवन जीने वाला, शहरी जीवन से दूर रहने वाला, एक भू–प्रदेश में रहने वाला, समान व्यवसाय करनेवाला, समान भाषा बोलने वाला और एक समान निमयों का पालन करने वाला समुदाय आदिवासी है । इस आदिवासी समाज पर अनेक सदियों से अत्याचार होते रहे हैं । फिर भी इसका अस्तित्व आज भी उस सितारे के समान टिका हुआ है, जो सदियों से आकाश के अनेक तारों के साथ चमकता रहा है । शहरी एवं सभ्य कहे जाने वाले समाज ने तथा शेठ–साहूकारों ने निरंतर इसका शोषण किया है। फिर भी इसने अपने रीति–रिवाज,

Scanned by CamScanner

रुढ़ि–परंपराएं ; जीवन–पद्धियां , तीज–त्योहार, व्यवसाय, विश्वास–मान्याताएँ, विधि–विधान आदि का जतन बड़ी खूबी से किया है । आदिवासियों के अपने अलग ही रीति–रिवाज है । त्योहारों को मनाने की अलग ही परंपराएँ हैं । इन्हीं रीति–रिवाजों और परंपराओं में ही इनके जीवन की रंगीनता एवं रसात्मकता निहित है ।

महाश्वेता देवी ने **'बाढ़'** नामक कहानी में सभ्य एवं उच्च वर्णीय लोगों काआदिवासियों के प्रति देखने का नजरिया, आदिवासियों की अभावग्रस्तता, परंपरागत व्यवसाय एवं उनकी इच्छा–आकांक्षाएँ आदि को बडे ही जीवंत रुप में चित्रित किया है । इस कहानी का मुख्य पात्र चीनिवास नामक एक लडका है । वहबागदी जाति की रुपसी का बेटा है । रुपसी नारियल के पत्ते छांट करझाड़ू बनाने का काम करती है । और चीनिवास की नानी (आजी) मछली पकडने का काम करती है । यह परिवार पूर्वस्थली नामक गॉव में रहता है ।बागदी जाति का यह परिवार अनेक अभावों एवं तकलीफों को झेलते हुए जीवन यापन कर रहा है । गॉव में इस परिवार जैसा गरीब परिवार दूसरा नहीं है। इस बार उनके गॉव में यह खबर फैली है कि गंगा में बाढ़ आनेवाली है । इसलिए सभी लोग डरे हुए हैं। गॉव के साथ यह परिवार भी डर हुआ है । चीनिवास की मॉ जब छोटी थी, तब शायद कटुआ के पास बाढ़ आयी थी। और इसमें अनेक लोग मर गए थे । इस बात को रुपसी की मॉ जानती है । चीनिवास और रुपसी को बाढ़ क्या होती है ? यह पता नहीं है । भाद्र मास में पूर्वस्थली गांव में रसोई–पूजा की जाती है । गांव के सभी गृहस्थ इस पूजा के लिए मनसा नामक पेड ढूँढते हैं और उसे अपने आंगन में गाढ़ उसकी पूजा करते हैं । पूर्वस्थली में आचार्य का परिवार बडा धार्मिक एवं संपन्न परिवार माना जाता है। अतः इस परिवार में मनसा का पेड लाकर देने का काम चीनिवास और उसका परिवार करता है। इस बार भी जब रसोई पूजा का दिन आ गया तो चीनिवास आचार्य के घर मनसा का पेड लाना है या नहीं यह पूछने के लिए जाता है । तब बडी आचार्यानी और छोटी आचार्यानी उसके साथ अस्पृशता वाला व्यवहार करते हैं । इसे हम निम्न संवदों के माध्यम से समझ सकते हैं । आचार्य के घर के दालान के एक किनारे चीनिवास आकर खड़ा है । चूँकि सभी छोटी जाति के लोगों को उनके घर के बाहर दालान के किनारे तक आकर रुकने की इजाजत थी । इसलिए चीनिवास भी उसी सीमा तक आकर रुक जाता है। तभी बडी आचार्यानी उसे कहती है –कौन ?

चीनिवास – मैं चीनिवास हूँ ।

बडी आचार्यानी – कौन चीनिवास ?

चीनिवास – उप्सी बागदीनी का बेटा । क्या आपके लिए मनसा का पेड ला दूँ , मॉ? यही पूछने आया था ।

बडी आचार्यानी के शरीर में आग लग गई । अभी ठाकुर जी को भोग देने जाना है, उसके पहले ही यह अभागा, कुलच्छनी बागदी का लड़का मुंह दिखाने आ गया ?"[3]

उक्त संवदों के माध्यम से ही स्पष्ट हो जाता है कि उच्च वर्ण या संवर्ण कहा जाने वाला वर्ग इन आदिवासियों के साथ हमेशा घृणापूर्ण व्यवहार करता रहा है। यह वर्ग आज भी अपने–आपको अन्य जातियों से श्रेष्ठ मानता है। दूसरी पिछड़ी जातियों के लोगों को घर के अंदर प्रवेश करने नहीं देता है। अतः इस तरह का जातिगत भेदभाव आदिवासियों के साथ सदियों से हो रहा है। फिर भी आदिवासी जनजातियों ने अपनी मासूमियत, भोलापन, सरलता, भावुकता, विनम्रता आदि गुणों को नहीं छोड़ा है । आदिवासियों की यह प्रवृत्ति उन्हें अधिक श्रेष्ठ साबित करती है।

बडी आचार्यानी ने बेटा होने के लिए अनेक वृत्त किए थे, पूजा–पाठ किए थे । परंतु उन्हें बेटा नहीं हुआ, सभी लड़कियां ही पैदा हुई। इसलिए आचार्य ने छोटी आचार्यानी के

Scanned by CamScanner

साथ दूसरी शादी की थी । जब दूसरी आचार्यांनी को बेटा हुआ । तब आचार्य बडे खुश हुए। लेकिन उनका वह बेटा बार-बार बीमार पडता था। इसलिए उसकी अधिक चिंता पूरा घर-परिवार करता था। अभी जब चीनिवास उनके घर के दवाज़ पर आ गया है । तब छोटी आचार्यांनी अपने नवजात बेटे को बाहर लेकर आती है । जब वह चीनिवास को देखती है, तभी झट् से वह अपने कमरे में वापस चली जाती है। ताकि चीनिवास की नजर लगने से कहीं उसका बच्चा फिर से बीमार न पड़ जाए । इसलिए कमरे के अंदर से ही वह चीनिवास को आवाज लगाती हुई कहती है – "भूजा लेकर खुशी-खुशी चला जा । बेटा, मेरे बच्चे की तरफ मत् देखना ।" [4] इस तरह की अंधश्रद्धा युक्त उच्च वर्गीय मानसिकता हमेशा निम्न वर्ग के लोगों को तुच्छता की दृष्टि से देखती है । उन्हें अभागा, कुलक्षणी, अपशकुनी मानकर उनके साथ दुर्व्यवहार करती है। आज इस मानसिकता में थोडा-सा परिवर्तन जरुर आया है, परंतु वह पूर्णतः नहीं बदली है। वह अनेक नए-नए रुपों में आदिवासी समाज के साथ दुर्व्यवहार करती नजर आती है । जबकि आदिवासी भी इसी मिट्टी का पुत्र है, उसने भी भारत के विकास में योगदान किया है । वह भी मनुष्य ही है । अतः उसके प्रति इस तरह का दुर्व्यवहार नहीं होना चाहिए ।

आदिवासी लोग विविध वन-औषधियों की जानकारी रखते हैं । वनों में मिलने वाली वनस्पतियों तथा भूचरों एवं जलचरों से बनाई जाने वाली औषधियों के दवारा वें लोगों का इलाज करते हैं और इससे मिलने वाले अनाज या रुपयों से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं।जंगली फूलों, फलों एवं पौधों की जानकारी रखने वाला इनके जैसा दूसरा कोई समुदाय भारत में नहीं मिलता । इसका चित्रण भी इस कहानी में प्राप्त होता है। जब चीनिवास भूजा लेकर अपनी नानीयानी आजी के पास तालाब पर आता है। तब वह मछली पकड रही थी। परंतु उसे मछली नहीं मिली थी। केवल घोंघे ही मिले थे। अतः चीनिवास उसे पूछता है –"घोंघा पकड़ के क्या होगा, आजी ?' इसके जवाब में उसकी नानी (आजी) कहती है– वैद्यजी के ससुर की ऑखों में मोतियाबिंद हो गया है। घोंघा उबाल कर खाने से ऑखें ठीक हो जाती है, इसीलिए वैद्य जी की घरवाली बीच-बीच में अपने पिता के लिए घोंघे मंगवा कर रख लेती है। बदले में कभी एक मुट्ठी चावल तो कभी एक छोटा-सा कुम्हड़ा दे देती है।"[5]इससे स्पष्ट है कि आज भी आदिवासी समाज विविध बीमारियों के इलाज के लिए उपयोगी चीजों एवं जलचरों को बेचकर उससे मिलने वाले मुआवजे से जीवन-निर्वाह करता है। इस समाज के पास जंगली फूलों, फलों, वनस्पतियों तथा भूचर एवं जलचरों से किस बीमारी पर कौनसा इलाज होता है ? इसकी भरपूर जानकारी है। लेकिन उच्च एवं संपन्न वर्ग इनसे अनेक तरह के फायदे करवा लेता है और बदले में कम-से-कम मुआवजा देकर इनका शोषण करता है। अतः सभ्य या संपन्न समाज की यह स्वार्थी वृत्ति सर्वथा गलत है ।

आदिवासियों पर निरंतर इस तरह का अन्याय-अत्याचार हो रहा है। कभी उनका शोषण किया जाता है । तो कभी उनकी औरतों को अपनी हवस का शिकार बनाया जाता है । जब कभी आदिवासी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने लगता है तो उसका कत्ल किया जाता है। जमीनदार, ठाकुर, ठेकेदार, साहूकार, महाजन आदि उच्च वर्गीय लोंग अपने स्वार्थ के लिए इस तरह का नीच काम हमेशा करते रहे हैं। महाश्वेता देवी ने अपनी कहानियों में उच्च वर्गीय लोगों की इस वृत्ति का खुलेआम विरोध किया है।'बीज'नामक कहानी आदिवासी समाज के हो रहे शोषण को यथार्थता से दर्शाती है।इस कहानी का मुख्य पात्र दूलन गंजू है। गंजू एक आदिवासी जनजाति है । इसका काम मरे हुए पशुओं की खाल निकालना है। ये लोग पुश्त-दर-पुश्त इसी काम को करते रहे हैं । पशुओं की खाल निकालकर उससे जो कुछ पैसा या अनाज मिलता है, उसीसे जीवन यापन करते हैं । आदिवासी समाज में बाल

Scanned by CamScanner

विवाह का प्रचलन कई इलाकों में नजर आता है । दूलन गंजू की पत्नी यानी धतुआ की माँ की शादी भी केवल चार साल की उम्र में ही दूलन गंजू के साथ हुई थी । चौदहवें साल में उसका गौना हुआ था और वह ससुराल आई थी। वह वाचाल औरत है । अगर किसी ने उसे छेड दिया तो वह उसके सात पुश्तों तक गालियां निकालती है । इसी वजह से उसके साथ कोई झगड़ा मोल नहीं लेता। गाँव के लोग ही नहीं, बल्कि पुलिसवाले भी उससे डरते हैं । उसके धतुआ और लटुआ नामक दो बेटें हैं।दूलन गंजू के साथ अभावग्रस्त जीवन जीते–जीते अब वह बूढ़ी हो चुकी है । दूलन गंजू वैसे चालक आदमी है । जब वह तामड़ी गाँव में रहता था, उस वक्त वहाँ के जंडैल राजपूत महाजन लछमन सिंह की कई भैसों को विष खिलाकर मार दिया था। और उनकी खाल निकालकर बेच दी थी। चूँकि लछमसिंह वहाँ का बहुत ताकतवार आदमी था । वह सभी गरीब परिवारों पर अन्याय–अत्याचार करता था। उनका शोषण करता था। कई लोगों को उसने अपने स्वार्थ के लिए मार भी दिया था। फिर भी दूलन गंजू ने उसकी कई भैसों को जहर देकर मार दिया था। ताकि जीवन यापन के लिए कुछ–न–कुछ पैसा मिल जाए । दूलन गंजू इसी तरह के अनेक शातिर मार्ग ढूँढ़कर किसी तरह से अपना परिवार पाल रहा है । अतः कई आदिवासी लोगों को जीवन–यापन का कोई जरिया न होने की वजह से इस तरह के कई कार्य करके पेट की आग बूझानी पडती है । इस बाबत कहानीकारा लिखती है कि "जिंदा रहने के लिए वह(दूलन गंजू)हमेशा, हर परिस्थिति से दिमाग के जोर पर फायदा उठाने की कोशिश करता । वह जानता है, केवल ताकत से कोई काम नहीं बनता । बोल कर नहीं, बल्कि कौशल और छल से वह अपने दुश्मनों को बुद्धु बनाता था और तरह–तरह की धूर्तताएं उसकी उंगलियों पर थीं ।"[6]सर्वोदय के स्वयंसेवकों ने जमीनदारों के पास जा–जाकर दूलन गंजू जैसे सर्वहरा लोगों को जमीने प्राप्त करवा दी है । दूलन गंजू को भी लछमन सिंह ने बंजर जमीन दान में दी थी। जब से जमीन मिली है, तब से वह उसमें से कुछ उगाता नहीं है । चूँकि जिस लछमनसिंह ने उसे जमीन दी थी । उसने ही उसे कुछ न उगाने की धमकी दी थी। क्योंकि उस जमीन में लछमनसिंह अपने रास्ते में रोडे अटकाने वाले आदिवासी लोगों का कत्ल करके दफन कर देता था। आदिवासियों को ये जमीनदार हमेशा ठगते हैं । उनके पास पाँच–सात सौ से लेकर दो हजार बीघे तक उपजाऊ जमीने थी । मगर जब सर्वोदय के कार्यकर्ता इनँका मन परिवर्तन करने आए तो इन्होंने ऊसर–बांगर जमीने आदिवासियों को दे दी । ताकि मान–सम्मान बढ़े । लेने वाले हमेशा के लिए कृतज्ञ हो जाए । और सरकार की निगाह से भी बचे । खुद करुणामय या दयावान कहलाए। यथा–"जमीन देने का काम हर तरह से उपयोगी था। एक तो बंजर जमीन निकल गई । लेने वाले हमेशा के लिए कृतज्ञ हुए। और सरकार की निगाह में अपना खूंटा और पक्का हो गया और फिर भोजन के अंत में रसगुल्ले की तरह अपने को करुणामय और दयामय दिखाने का आनंद सबसे ज्यादा मीठा था।" [7] उक्त कथन से स्पष्ट है कि उच्च वर्ग हमेशा अपने फायदे का ही सोचता है। वह कभी दूसरों की भलाई करने की ईमानदार कोशिश नहीं करता। अगर किसी गरीब आदिवासी को कुछ दान भी दे रहा हो तो उसके पीछे उसकी स्वार्थी वृत्ति ही निहित होती है। इस तरह से महाश्वेता देवी ने अपनी कहानियों में आदिवासी समाज पर हो रहे अत्याचारों, उच्च वर्गीय लोगों की दोगली मानिसकता, उनकी स्वार्थी वृत्ति, आदिवासियों के प्रति उनका हीनतावादी दृष्टिकोण, आदिवासी समाज की प्रकृतिगत चीजों की जानकारी रखने प्रवृत्ति, उनकी अभावग्रस्तता, भोलापन, मासूमियत, जीने के लिए की जाने वाली धूर्तता, वाचालता आदि पर सूक्ष्मता से प्रकाश डाला है । ताकि आदिवासी समाज पर होने वाले अत्याचार कम हो जाए । उनका विकास शहरी समाज की तरह हो । उनके साथ जातिभेद वाला व्यवहार न हो ।

Scanned by CamScanner

संदर्भ सूची :

1) हिंदी के औंचलिक उपन्यासों में आदिवासी जनजीवन– डॉ. भरत सगरे , पृ.31 प्रथम संस्करण –2014, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, गोविंद नगर, कानपुर ।
2) वही , पृ. 31
3) महाश्वेता देवी की श्रेष्ठ कहानियां – अनुवादक – डॉ. माहेश्वर , (बाढ़ कहानी) पृ. 4 प्रथम संस्करण : 1993 , हिंदी अनुवाद : नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया , नई दिल्ली ।
4) वही, (बाढ़ कहानी) 4
5) वही, (बीज कहानी) , पृ. 13
6) वही, (बीज कहानी) पृ. 15
7) वही,(बीज कहानी) पृ. 13

डॉ. काशीनाथ सिंह की कहानियोंमेंअभिव्यक्तदलितचेतना

डॉ. सुनील द. चव्हाण,
असिस्टंटप्रोफेसरहिंदी,
संगमनेरनगरपालिकाआर्टस
डी.जे. मालपाणी कॉमर्सॲण्ड
बी.एन.सारडासायन्सकॉलेज,
संगमनेर– 422605
अहमदनगर (महाराष्ट्र)

सूचना प्रौद्योगिकी के इस युगमें, विकास की निरंतर धारामें ' दलित औरस वर्ण ' इनदो शब्दों का भी अपना विशिष्ट महत्व भारतीय समाज मेंहमेंदिखाईदेताहै।भारत वर्ष जहाँ समृध्द परंपरा ओं निर्वहन किया जाता है दूसरी ओर जाति, धर्म, रंग, लिंग भेद आदि के बीज गहरे मे विद्यमान है। 'सवर्ण और दलित' ये दो शब्द भारत वर्ष को प्रभावित करनेवाले शब्द हैं। यहाँ समाज, राजनीति और अर्थ के संबंध में परिणामकारकता परिलक्षित होती है।दलित शब्द के लिए विविध शब्दकोशों में अनेक पर्यायवाची शब्द मिलते हैं। दलित अर्थात मसला हुआ, रौंदा या कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ, मर्दित, दबाया हुआ, खंडित आदि। सामान्य तया जो लोग समाज के तथा कथित उच्च (सवर्ण) लोगो द्वारा अन्याय, अत्याचारों से दबाये गये, जिनको सदियों से सामाजिक प्रतिष्ठा से दूर रखाग या, जिनको पीढ़ी–दर–पीढ़ी आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक दृष्टि से अलिप्त रखा गया उन्हें दलित कहा गया। वर्तमान में दलित शब्द का पकयोग विशिष्ट जातियों, समूहों के लिए प्राप्त होता है। दलित वह है जो सामाजिक दृष्टि से उच्च वर्ग से नहीं अर्थात सवर्णों में से नहीं। आज सवर्ण फिर चाहे वह कित नाभी निर्धन क्यों न हो , उसे दलित नहीं माना जाता। जाति या कुल की उच्च ता उसे सम्मान प्रदान करती है। भले ही आज अछूत, पीड़ित, असहाय, दीन–हीन, दुःखी, दुर्बल इन दलित शब्द के पर्यायवाची शब्दों की जगह कुछ विशिष्ट जाति यों में जन्म लेने के कारण लोगों को उपेक्षित रहना पड़ा, उनको शोषण काशिकार बनना पड़ा, तिरस्कार की दृष्टि झेलनी पड़ी, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और मानवीय अधिकारों से दूर रहना पड़ा। क्रिया के प्रतिक्रिया स्वरुप कुछ लोगो ने विद्रोह ही राह पकड़ अन्याय के विरुध्द आवाज उठाई। अछूतों को सामाजिक अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ा। लित

Scanned by CamScanner

Organized by
Pune District Education Association's
Annasaheb Waghire Arts, Science and Commerce College, Otur,
Tal. Junnar, Dist. Pune, Maharashtra – 412409, India

Scanned by CamScanner